

शिवाष्टकम्

प्रभुम् प्राणनाथम् विभुम् विश्वनाथम्
जगन्नाथम् सदानन्दलाभम् |
भवदभव्यभूतेश्वरम् भूतनाथं
शिवम् शंकरम् शम्भुमीशानमीडे || १ ||

गले रूडमालम् तनौ सपञ्जालम्
महाकालकालम् गणेशाधिपालम् |
जटाजूटगंगोत्तरअगैविशालम्
शिवम् शंकरम् शम्भुमीशानमीडे || २ ||

मुदामाकरम् मंडनम् मंडयन्तम्
महामंडलम् लस्मभूषाधरन्तम् |
अनादिम् त्वपारम् महामोहमारम्
शिवम् शंकरम् शम्भुमीशानमीडे || ३ ||

तटाधोनिवासम् महावृद्धासम्
महापापनाशम् सदा सुप्रकाशम् |
गिरीशम् गणेशम् सुरेशम् महेशम्
शिवम् शंकरम् शम्भुमीशानमीडे || ४ ||

गिरीन्द्रात्मजसङ्गृहीतार्धदेहम्
गिरौ संस्थितम् सर्वदासन्नगेहम् |
परब्रह्म ब्रह्मादिविपेन्धमानम्
शिवम् शंकरम् शम्भुमीशानमीडे || ५ ||

कपालम् त्रिशूलम् कराव्याम् दधानम्
पदाभोजनम्राय कामम् दधानम् |
बलीवर्ध्यानम् सुराणाम् प्रधानम्
शिवम् शंकरम् शम्भुमीशानमीडे || ६ ||

शरच्चन्द्रगात्रम् गुणानन्दपात्रम्
त्रिनेत्रम् पवित्रम् धनेशस्य मित्रम् |
अपञ्चकलत्रम् चरित्रम् विचित्रम्
शिवम् शंकरम् शम्भुमीशानमीडे || ७ ||

हरम् सपेदारम् चिताभूविहारम्
भवम् वेदसारम् सदा निर्विकारम् |
शमशाने वसन्तम् मनोजम् दृष्टम्
शिवम् शंकरम् शम्भुमीशानमीडे ॥ ८ ॥

स्तवम् यः प्रभाते नरः शूलपाशैः
पठेत्सर्वदा भग्नोत्पानुरक्तः |
स पुत्रम् धनम् धान्यमित्रम् कुलत्रम्
विचित्रम् समासाद्य मोक्षम् प्रयाति ॥ ९ ॥

PORTLAND PANDIT